नववर्षांक

गांधी मार्ग

जनवरी-फरवरी 2024

हटो व्योम के मेघ-पंथ से
स्वर्ग लूटने हम आते हैं...

० महात्मा गांधी ० दिनकर ० जस्टिस मदन लोकुर ० गोपालकृष्ण गांधी

गांधी-मार्ग

अहिंसा-संस्कृति का द्वैमासिक
वर्ष 66, अंक 1, जनवरी-फरवरी 2024

गांधी शांति प्रतिष्ठान

1.	**नववर्ष** : प्रार्थना और संकल्प	गोपालकृष्ण गांधी	5
2.	**नववर्ष** : नये साल की कविता	रामधारी सिंह 'दिनकर'	9
3.	**दस्तावेज** : आज अंग्रेजी....	महात्मा गांधी	10
4.	**नववर्ष** : चाहिए कुछ समर्पण...	अनुपम मिश्र	13
5.	**नववर्ष** : जरा देखिए!	डॉ. जाकिर हुसैन	15
6.	**नववर्ष** : वे दिनः वे लोग	जानकीदेवी बजाज	17
7.	**नववर्ष** : तीसरे विश्वयुद्ध को...	राजेंद्र सिंह	20
8.	**नववर्ष** : सड़कों पर उतरे तो रास्ता मिला	उपेंद्र शंकर	24
9.	**व्याख्यान** : क्या संविधान हमारी...	मदन भीमराव लोकुर	26
10.	**अयोध्या** : यह सब तो गलत ही है...	सरोज मिश्र	48
11.	**इतिहास-शोध** : गांधीजी की...यात्रा	सुनील भट्ट	50
12.	**टिप्पणियां**		59
13.	**पत्र**		63

आवरण : मौत के रेगिस्तान में जीवन के फूल! : 25 हजार से ज्यादा गजी लोगों की हत्या का तोहफा देकर 2023 हमसे विदा हुआ. 2024 का स्वागत करते गजा के अपने मकानों व अपने भविष्य के मलबों के सामने खड़े ये दो फलस्तीनी बच्चे आपको कैसे दीख रहे हैं? वैसे ही न जैसे मौत के सामने जिंदगी दीखती है! 2024 से हम और 2024 हमसे यही पूछता है कि क्या ऐसे बच्चों के लिए हमारी दुनिया में कोई सुरक्षित कोना है? आवरण-सज्जा हमेशा की तरह **कीर्ति** ने की है.

वार्षिक शुल्क : भारत में 200 रुपये, दो वर्ष के 350 रुपये, आजीवन-1000 रुपये (व्यक्तिगत), 2000 रुपये (संस्थागत), एक प्रति का मूल्य 20 रुपये, डाक खर्च निःशुल्क। दो माह तक न मिलने पर शिकायत लिखें। अपना शुल्क चेक, बैंक ड्राफ्ट, मनीऑर्डर द्वारा 'गांधी शांति प्रतिष्ठान' के नाम भेजें। ऑनलाइन भुगतान के लिए केनरा बैंक खाता नं. 0158101030392 IFSC CODE : CNRB 0000158.

संपादन : कुमार प्रशांत **प्रबंध** : मनोज कुमार झा **प्रसार** : भगवान सिंह

गांधी शांति प्रतिष्ठान, 223 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 के लिए अशोक कुमार द्वारा प्रकाशित
फोन : 011-2323 7491, 2323 7493, **Email:** gmhindi@gmail.com

मुद्रक : नीता प्रेस, 3574- गली जटवारा, नियर सबलोक क्लीनिक, दरियागंज, दिल्ली-110002, फोन नं. 8800646548

शुरू में...

नये साल का पहला अंक लेकर 'गांधी-मार्ग' आपके सामने है.

नया साल कैसे व किधर से आया? कुछ लोग कहेंगे : राममय हुआ देश तो नया साल आया; कुछ कहेंगे : न्याय व एकता के सूत्र जोड़ने निकली यात्रा तो नया साल आया; कुछ ऐसे भी होंगे जो कहेंगे कि हमारा नया साल तो हर साल कैलेंडर बदलने से आता है, सो इस साल भी कैलेंडर बदल गया तो नया साल आया. बहुत सारे होंगे जो नयेपन के किसी बोध के बिना अपने घर का चूल्हा जलाने की लकड़ी खोजने वैसे ही निकले होंगे जैसे पुराने सालों में निकलते थे. तो कहें कि सबका अपना-अपना नया साल है, जैसे सबके अपने-अपने जन्मदिन हैं.

अगर राम की बात करें तो उनका एक ही मतलब है : मर्यादा; और वह मर्यादा भी आज की कसौटी पर नहीं, उनके वक्त की कसौटी पर! मर्यादा यदि कोई मृत अवधारणा नहीं है (जोकि नहीं होनी चाहिए अन्यथा मर्यादा की मर्यादा ही खत्म हो जाएगी!) तो मानवीय चेतना के विकास के साथ-साथ उसका भी विकास होता है. उसका विकास होता रहता है इसलिए समाज उसे स्वाभाविकता से ग्रहण करता रहता है. राम उसी मर्यादा के प्रतीक-पुरुष हैं. कथा कहती है कि वे अपने वक्त के समाज के सभी घटकों को जोड़ कर, अतिचार व अधिनायकवाद के खिलाफ युद्ध संयोजित कर सके. और सबको साथ लेकर अयोध्या का रामराज चला सके. वे इतिहासपुरुष हैं या नहीं, इस पर विवाद हो सकता है लेकिन वे इस राष्ट्र के चेतनापुरुष बनते गए हैं, यह विवाद से परे है.

रावण प्रतीक है उन सबका जो खुद को केंद्र में रखकर सारी सृष्टि को नियंत्रित करने का अहंकार पालते हैं; जो कहते व मानते हैं कि जो कुछ भी अच्छा है, शुभ है, सबका निर्धारक मैं ही हूं और उन सबकी पूर्ति के लिए ईश्वर ने मुझे ही रचा व चुना है. यह अहंकार ही रावण है. अहंकार व मर्यादा का यह द्वंद्व ही राम-रावण का संघर्ष है. यह हर व्यक्ति के भीतर भी और समाज में भी जारी रहता है. यदि यह द्वंद्व राममय होता है तो नयी मर्यादाएं स्थापित होती हैं, उनका पालन करने के लिए नयी सामाजिक प्रतिबद्धताएं उजागर होती हैं. यदि यह रावणमय होता है तो मर्यादाएं टूटती ही नहीं, कलुषित होती जाती हैं. 'गीता' इसलिए ही तो कहती है कि ऐसे कलुष का विच्छेदन करने मैं बार-बार जन्म लेता हूं.

राम के नाम पर जिस मंदिर का निर्माण किया गया है, उसे जायज घोषित करने से लेकर उसके निर्माण तक में तमाम मर्यादाएं टूटी हैं. भारतीय समाज की अनोखी संरचना की मर्यादा टूटी है; न्यायपालिका की प्रमाणसिद्धि व तटस्थता की मर्यादा टूटी है; राज्य की धार्मिक एकात्मता की मर्यादा टूटी है; प्रशासन की दलीयता से विमुख रहने की मर्यादा टूटी है; लोकतंत्र और राज्य के फर्क की मर्यादा टूटी है. इतनी मर्यादाएं खंड-खंड पड़ी हों, भारत की आत्मा को रक्तरंजित कर रही हों और कुछ लोग विजय की दुंदुभि बजा रहे हों तो यह अभिशप्त देश जैसे अपने इतिहास को दोहराने के श्राप से ग्रसित है. ज्यादा नहीं, केवल 75 साल पहले ही तो हम रक्त की नदी तैर कर अपनी राजनीतिक आजादी तक पहुंचे थे. तब भी तो इस महान संस्कृति का अपना-अपना टुकड़ा लेकर कुछ लोग विजय की दुंदुभि बजा रहे थे. मुल्क की पराजय में आज भी निजी जय का जश्न मनाने की अंधता में जिन्हें 'नया भारत' दिखाई दे रहा है, वे दया के पात्र हैं.

कहीं से खबर आई थी कि किसी ने श्रद्धा के वशीभूत होकर एक गांधी-मंदिर बनाया है जिसमें राम-कृष्ण की मूर्तियों के साथ गांधी-प्रतिमा की पूजा होती है. खबर गांधीजी तक पहुंची, तो उन्होंने सार्वजनिक बयान दिया : "एक अखबार की कतरन मुझे भेजी गई है जिसमें कहा गया है कि मेरे नाम का एक मंदिर बनवाया गया है जिसमें मेरी मूर्ति की पूजा की जाती है. जिसने यह किया है उसने अपने पैसे बरबाद किए हैं, गांव के भोले-भाले लोगों को गलत रास्ता दिखाया है, मेरे जीवन का गलत खाका खींच कर मेरा अपमान किया है. यह पूजा नहीं, अनर्थ है. जिंदा आदमी की मूर्ति बनाकर उसकी पूजा करने से हम हिंदू धर्म को पतन की आखिरी सीढ़ी पर पहुंचा देते हैं. जिंदा या मरे हुए आदमी को पूजने के बदले जो पूर्ण है, सत्यस्वरूप है, उस ईश्वर को पूजने व उसी का भजन करने में कल्याण है... फोटो रखने का रिवाज भी खर्चीला तो है मगर उसे निर्दोष समझकर मैं अब तक उसको बर्दाश्त करता आया हूं. अगर उस वजह से मैं प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रीति से मूर्तिपूजा को तनिक भी बढ़ावा देता होऊं, तो उसे भी हास्यास्पद व हानिकारक समझकर छोड़ दूंगा... मंदिर के मालिक को चाहिए कि मूर्ति को हटा कर, उस मकान में खादी का केंद्र खोले. इससे फिलहाल जो पाप वे कर रहे हैं उससे बच जाएंगे. उस मकान में गरीब लोग मजदूरी के लिए धुनें और कातें; दूसरे यज्ञ के लिए धुनें-कातें; सब खादी पहनने लगें. यही गीता का कर्मयोग है. गीता की और मेरी यही सच्ची पूजा होगी. दूसरी पूजा हानिकारक है और इसलिए छोड़ने लायक है."

नया साल हमारा मन नया बना सके, इस कामना के साथ सबको मुबारक!

० कु. प्र.